RAJA BALWANT SINGH ENGINEERING TECHNICAL CAMPUS BICHPURI, AGRA

DLA : 25/08/2018

भंडारण के अभाव में 94 करोड़ के कृषि उत्पाद नष्ट हो जाते हैं

राजा बलवंत सिंह इंजीनियरिंग कैंपस में आयोजित गोष्ठी में विचार व्यक्त करती वक्ता।

DLA News

■ आरबीएस इंजीनियरिंग कैंपस में पोस्ट हार्वेस्ट तकनीक पर व्याख्यान

आगरा। राजा बलवंत सिंह इंजीनियरिंग टेक्निकल कैंपस में फूड टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा पोस्ट हार्वेस्ट तकनीक के नए आयामों विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। वक्ता के रूप में आई जम्मेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार की प्रो. अराधिता बर्मन ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है लेकिन यहां पर फसल कटाई के पश्चात लगभग 94 हजार करोड़ रुपये के ताजे कृषि उत्पाद उचित रखरखाव भंडारण व प्रसंस्करण के अभाव में नष्ट हो जाते हैं। भारत फलों एवं सब्जियों के उत्पादन में विश्व में द्वितीय स्थान पर है लेकिन हमारे यहां लगभग 16 प्रतिशत फल व सब्जियां नष्ट हो जाती हैं। इसके लिए प्रो. अराधिता ने पोस्ट हारवेस्ट तकनीकी के महत्व पर बल देते हुए इसके विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया।

डॉ. अपूर्व बिहारी लाल ने बताया कि भारत जैसे विकासशील देश के लिए ताजे कृषि उत्पादों का यह नुकसान चिंता का विषय है व खाद्य सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। डॉ. लाल ने बताया कि अध्ययन के अनुसार यदि इस नुकसान को समाप्त किया जा सके तो इससे एक वर्ष में पांच करोड़ लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है।

निदेशक प्रशासनिक एवं वित्त पंकज गुप्ता ने बताया कि इस प्रकार के व्याख्यान छात्र-छात्राओं को तकनीकी ज्ञान की गुणवत्ता सुधारने में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। निदेशक अकेडमिक डॉ. बीएस कुशवाह ने कहा कि इस विषय पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। इंजी. आशीष खरे, इंजी. आशीष शुक्ला, इंजी. अमित प्रताप, इंजी. सोनम पिप्पल आदि उपस्थित रहीं।

Dainik Jagran Inext : 25/08/2018

हारवेस्ट तकनीक की दी जानकारी

गुरू जम्मेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय से आईं प्रो. अराधिता वर्मन ने हारवेस्ट तकनीक के लिए अवगत कराया. कार्यक्रम का आयोजन आरबीएस इंजीनियरिंग टैक्निकल कैंपस में फूड टैक्नोलोजी विभाग ने कराया. प्रो. अराधिता ने बताया कि फसल कटाई के दौरान लगभग 94,000 करोड़ रु. के कृषि उत्पाद रखरखाव, भंडारण, की कमी से नष्ट हो जाते है. इसके लिए पोस्ट हारवेस्ट तकनीक के महत्व को बल देते हुए कई पहलुओं को चिन्हित किया गया. संस्थान के निदेशक बीएस कुशवाह ने विभाग को इस आयोजन पर शुभकामनाएं दीं. इंजी. आशीष खरे ने सभी का धन्यवाद किया और इंजी. अमित प्रताप व इंजी. सोनम पिप्पल का विशेष योगदान रहा.

Hindustan : 25/08/2018

94 हजार करोड़ के फल सब्जी हो रहे हैं खराब

आगरा | हिन्दुस्तान संवाद

देश में 94 हजार करोड़ के फल और सब्जी भंडारण के अभाव में खराब हो रहे हैं। यह स्थिति तब है जबकि हम दुनिया में उत्पादन के मामले में दूसरे स्थान पर हैं। यह बातें गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार की प्रो. अराधिता बर्मन ने कहीं।

वह आरबीएस इंजीनियरिंग टेक्निकल कैंपस में पोस्ट हारवेस्ट टेक्नोलॉजी के नए आयाम विषय पर आयोजित लेक्चर में बोल रहीं थी। फूड टेक्नोलॉजी विभाग की ओर से आयोजित लेक्चर में प्रो. अराधिता बर्मन ने कहा कि देश में हर साल कुल उत्पादन का 16 प्रतिशत फल और सब्जियां भंडारण के अभाव में खराब हो रही हैं। उन्होंने कहा कि हमें बेहतर भंडारण और संरक्षण पर जोर देना होगा। ताकि उत्पादन का पूरा लाभ लोगों को मिल सके। इस मौके पर डीन डॉ. अपूर्व बिहारी लाल, इंजी. आशीष खरे और इंजी. इंजी. सोनम पिप्पल और इंजी. अमित प्रताप सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

शुक्रवार को आरबीएस विशेष व्याख्यान सत्र में उपस्थित छात्र-छात्राएं। ● हिन्दुस्तान

Amar Ujala : 25/08/2018

देश में 16 फीसदी फल, सब्जियां नष्ट हो जाती हैं

आगरा। राजा बलवंत सिंह इंजीनियरिंग टेक्निकल कैंपस, बिचपुरी के फूड टेक्नोलॉजी विभाग में शुक्रवार को 'पोस्ट हार्वेस्ट तकनीक के नए आयाम' विषय पर विशेष व्याख्यान सत्र का आयोजन किया गया। गुरु जम्भेश्वार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार की प्रो. अराधिता बर्मन ने व्याख्यान दिया।

'पोस्ट हार्वेस्ट तकनीक के नए आयाम' विषय पर व्याख्यान

प्रो. अराधिता ने कहा कि देश में फसल कटाई के बाद करीब 94000 करोड़ रुपये मूल्य के ताजे कृषि उत्पाद उचित रखरखाव, भंडारण व प्रसंस्करण के अभाव में नष्ट हो जाते हैं। भारत फलों और सब्जियों के उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। यहां करीब 16 फीसदी फल और सब्जियां नष्ट हो जाती हैं। उन्होंने पोस्ट हार्वेस्ट तकनीकी को अपनाने पर बल दिया। खाद्य भंडारण, खाद्य प्रसंस्करण, कोल्ड चेन विकास, फूड पैकेजिंग और मूल्य संवर्धन के इस्तेमाल और आधुनिक तकनीकी पर चर्चा की। संस्थान के डीन डॉ. अपूर्व बिहारी लाल ने कहा कि भारत जैसे विकासशील देश के लिए ताजे कृषि उत्पादों का यह नुकसान चिंता का विषय है। इस नुकसान को समाप्त किया जा सके तो इससे एक वर्ष में पांच करोड़ लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जा सकता है। संस्थान के निदेशक डॉ. बीएस कुशवाह ने कहा कि इस विषय पर गंभीर चिंतन की आवश्यकता है। आशीष खरे ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अमित प्रताप सिंह, सोनम पिप्पल ने सहयोग दिया। ब्यूरो